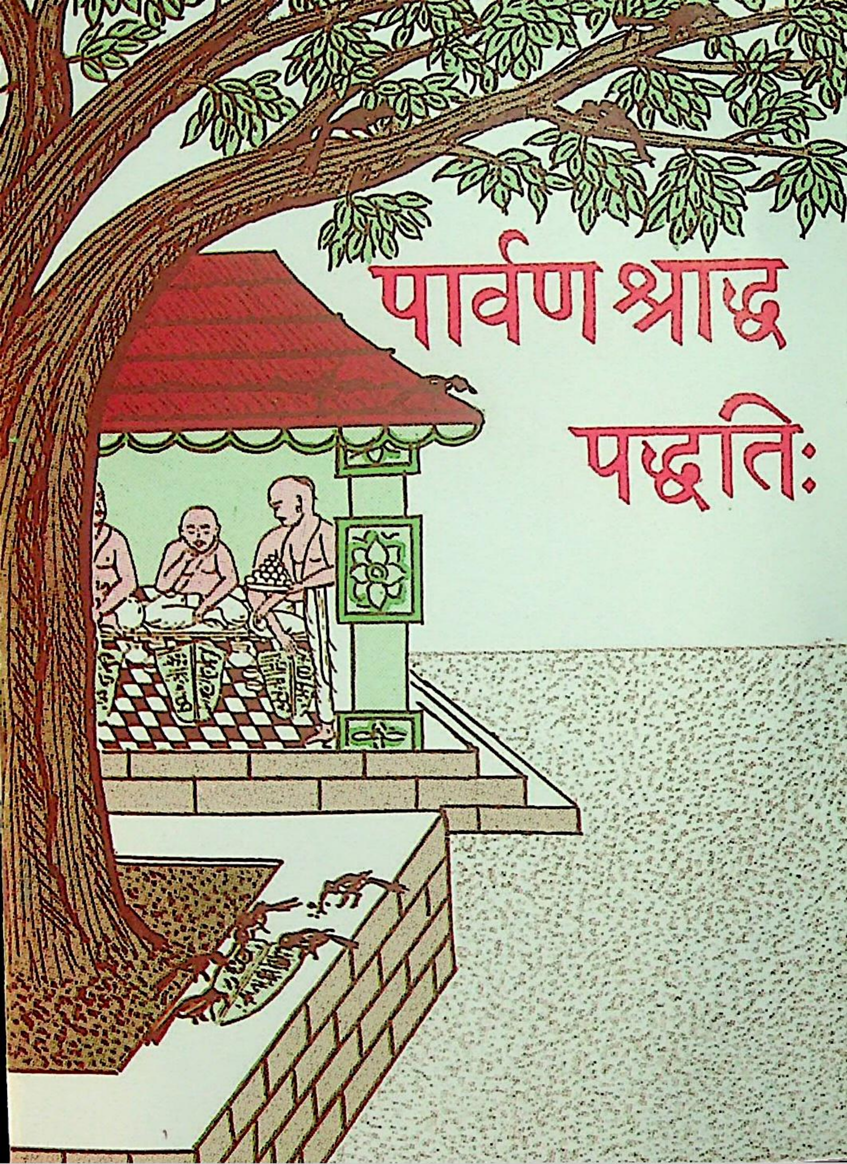
पार्वण श्राद्ध पद्धतिः



॥ श्रीः ॥

पार्वणश्राद्धपद्धतिः ।

आगरानिवासिपंडितराधाकृष्ण-
मिश्रकृतभाषाटीकासहिता ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जनवरी २०१३ सम्वत् २०६९

मूल्य : ३० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

भाषाटीकासहिता

पार्वणश्राद्धपद्धतिः ।

नत्वा वेदत्रयमयीं वाचं वेदमणिर्द्विजः ।
श्राद्धानुक्रमणीं वक्ति शिष्यश्रमनिवारिणीम् ॥ १ ॥
भाषार्थयुक्तां संक्षेपां कात्यायनमतानुगाम् ।
यस्याः श्रवणमात्रेण मूढः कर्मठतां व्रजेत् ॥ २ ॥

तत्र सायं निमंत्रणमिति ब्राह्मणानाम् ।

श्राद्धके दिनसे पूर्वदिन संध्यासमय श्राद्धकर्ता कुण्डगोलकादिदोषरहित ब्राह्मणोंको निमंत्रण करे ।

प्रातः स्नानीयादिसंप्रेषणनिमंत्रितद्विजश्मश्रुनखनिकृंतनमिति ॥

श्राद्धके दिन प्रातःकाल स्नानके अर्थ मिष्टजल और

संस्करण : जनवरी २०१३ सम्वत् २०६९

मूल्य : ३० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

भाषाटीकासहिता

पार्वणश्राद्धपद्धतिः ।

नत्वा वेदत्रयमयीं वाचं वेदमणिर्द्विजः ।
श्राद्धानुक्रमणीं वक्ति शिष्यश्रमनिवारिणीम् ॥ १ ॥
भाषार्थयुक्तां संक्षेपां कात्यायनमतानुगाम् ।
यस्याः श्रवणमात्रेण मूढः कर्मठतां व्रजेत् ॥ २ ॥

तत्र सायं निमंत्रणमिति ब्राह्मणानाम् ।

श्राद्धके दिनसे पूर्वदिन संध्यासमय श्राद्धकर्ता कुण्डगोलकादिदोषरहित ब्राह्मणोंको निमंत्रण करे ।

प्रातः स्नानीयादिसंप्रेषणनिमंत्रितद्विजश्मश्रु-नखनिकृंतनमिति ॥

श्राद्धके दिन प्रातःकाल स्नानके अर्थ मिष्टजल और

उवटनादिक ब्राह्मणोंके घर भेज देय और विश्वेदेवादिकी प्रीत्यर्थ निमंत्रण किया है तिनकी डाढी हजामत सब कराय देय और हाथ पांवके वीसों नख कटवाय दे, फिर उसी दिन मध्याह्नसमय श्राद्धकर्ता आप स्नान करि पूजादि नित्यकर्मसे निवृत्त होयके श्राद्धकी जो सामग्री है तिन्हें सब इकठी करिके निश्चिंत होकर स्वस्थचित्त होय, तब विश्वेदेवाके अर्थ दो वेदी गोल करे और दो ब्राह्मण वे कुष्ठी नपुंसक न होंय तिनको पूर्वमुख करिके अपने दाहिनी ओर बैठावे; और अपने सन्मुख तीन पितृब्राह्मण बैठावे, तथा मातामहादि तीनों ब्राह्मणभी इन्हींके निकट बैठावे, और जो विश्वेदेवाद्यर्थ ब्राह्मण न मिले तौ अपने दाहिनी ओर ढाकके पत्तेपर दो कुशकी चट रक्खे, तिनको विश्वेदेवा जाने, और अपने सन्मुख पौन गजपर ढाकके पत्तेपर तीन चट रक्खे, तिनको पितृब्राह्मण जाने, और ऐसेही इनके बराबर पत्ता रक्खे, और चट रक्खे, इनको मातामह ब्राह्मण जाने, फिर अपने दाहिनी ओर श्राद्धकी

सामग्री रक्खे। श्वेतचंदन घिसा हुआ १ तिल २ जौ चावल ३ श्वेत फूल सुगंधके ४ तुलसीदल ५ चंदनका चूरा ६ जलपात्र ७ तिलके पुष्प ८ बतासे नैवेद्य ९ ऋतुफल १० दक्षिणा श्रद्धापूर्वक धोतीजोडा अथवा अंगवस्त्र १ धोती गंगाजल ११ घी १२ बूरा १३ सहत १४ पान १५ क्षीर अथवा चावलका आटा १६ गौका कच्चा दूध १७ यज्ञोपवीत १८ सूत्र श्वेत १९ सुपारी २० विश्वेदेवाके अर्थ दक्षिणा सुवर्ण २१ पितृब्राह्मणार्थ रूपेकी दक्षिणा २२ कुशा २३ ढाकके पत्ते २४ दोनी नग २५ तांबेका अर्घा २६ खगोता २७ उष्णीषादिक वस्त्र २८ रेत गंगायमुना अथवा नदीकी २९ इत्यादिक श्राद्धकी सामग्री और अपने बांई ओर कर्मपात्रके हेतु तांबेका पात्र धरे और राक्षसोंके विघ्न दूरि करनेको मीठे तेलका दीपक जलाके धरे, इस प्रकार सब सामग्री इकट्ठी धरिके श्राद्धकर्ता श्राद्ध करे इति।

अथ श्राद्धकर्त्तव्यता पात्रिकपार्वणश्राद्धप्रयोगः ।

अपराह्ले स्नातः शुक्लद्विवासाः शुचिराचम्य वस्त्रादिना वेष्टितं श्राद्धदेशमागच्छेत् ततः प्राङ्मुख उपविश्य सिद्धान्नसंभवे सिद्धमिति पाचिकां पृष्ट्वा इति । ॐ अपवित्र इत्यादि पठित्वा ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्विति कुश-त्रयानीतजलैः श्राद्धवस्तूनि सिञ्चेत् रक्षार्थं दीपं निधाय गौरसर्षपैरवकीर्य ।

अब श्राद्ध करनेकी यह रीति है कि प्रथम तौ अपराह्लकालमें शुद्धजलसे स्नान करिके श्वेत धोती पहिरके पवित्रजलसे आचमन करिके जहां श्राद्ध करनेकी जगह है तहां आवे और सुंदर आसनपर पूर्वदिशाकी ओर मुखकरिके बैठे और पाहिले सिद्धान्नको करि तस्मै बनावे तब यह मंत्र पढ़े ।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥
पुण्डरीकाक्षः पुनात्विति॥

फिर जो सब श्राद्धकी सामग्री है तिसको तीन कुशा लेकर जलसे छिडके और रक्षाके अर्थ मीठे तेलका प्रथम दीपक जलावे तिसके पीछे पीली सरसों लेकर अपनी रक्षा करे अपने चारों ओर फेंके तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखते हैं।

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥
फिर यह पढे।

प्राच्यै नमः अवाच्यै नमः प्रतीच्यै नमः उदीच्यै नमः।

फिर यव पुष्प लेकर पृथ्वीपर छोडे तब यह पढे।

भूम्यै नमः इति भूमिं त्रिः संपूज्य।

फिर दो कुशाकी पवित्री अपने दाहिने हाथकी अनामिकामें पहिरे और तीन कुशाकी पवित्री अपनी बांई अनामिकामें पहिरे फिर तीन कुशा अपने आसनके नीचे धरे और एक कुशा अपने पांवके नीचे धरे और एक कुशा अपनी शिखामें धरे और एक कुशा अपने जनेऊमें लगावे तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है ।

द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीण्यासने तथा ।
पादमूले शिखायां तु सकृद् यज्ञोपवीतके ॥

तिस पीछे अपने दाहिनी ओर जो चट धरी हैं वा ब्राह्मण बैठाये हैं तिनके आगे दोनों अपने हाथकी अंजुली करिके विश्वेदेवा ब्राह्मणोंको आह्वान करि बैठावे तब इस मंत्रको पढे सो नीचे लिखा है ।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरूरवार्द्रवनामानो विश्वेदेवा ब्राह्मणाः आगतं वः सुस्वागतम् ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्मेति ॥

तिस पीछे अपने हाथकी पवित्री दोनों उतारिके पृथ्वीमें धरि फिर अर्घमें जल भरिके उन विश्वेदेवानके पादप्रक्षालन करे तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है।

नमोऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

तिसके पीछे विश्वेदेवा ब्राह्मणोंको निमंत्रण करे पान सुपारी चंदन फूल तुलसीदल यव कुश चट दक्षिणा लेकरिके आगे धरे निमंत्रणके अर्थ जो मंत्र नीचे लिखा है सो पढे।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरूरवआर्द्रवनामानो विश्वेदेवा ब्राह्मणा अद्य कर्तव्ये पार्वणश्राद्धे तत्रभवंतो मया निमंत्रिता आमंत्रिताः स्म इति॥

अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा॥

यह पढकरिके पान सुपारी इत्यादिक वस्तु विश्वे-देवानपर धरे फिर पादार्घके अर्थ दो वेदी बनावे विश्वे-देवा ब्राह्मणोंके आगे तापर दो दौनी धरे एक एक कुशा दौनीके नीचे धरे और एक एक कुशा दौनीमें डाले फिर उनमें जल भरे तब यह मंत्र पढे ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥

तिसके पीछे तांबेके अर्घामें जल भरके इस मंत्रको पढकरिके विश्वेदेवानपर चढावे सो नीचे लिखा है ।

पित्रादित्रयादिश्राद्धसंबंधिनो विश्वदेवा
ब्राह्मणा एष पादार्घं वो नमः ।

इसी प्रकार दूसरे विश्वेदेवानकी चट जो है तिसका निमंत्रणादिक आसन पादार्घ करे फिर पवित्री जो उतार धरी हैं तिन्हें दोनों अनामिकामें पहिर ले फिर अपसव्य कहिये दाहिये कंधेपर जनेऊ रखे और दक्षिणदिशाको मुख करिके आप बाईं जांघ नवायकर और अपने

हाथकी दोउ अंजुली करिके पितृब्राह्मण और मातामह-ब्राह्मणोंको आह्वान करि बैठावे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकाऽमुकशर्माणः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः आगतं वः सुस्वागतं ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्मोति।

फिर मातामहके पक्षके ब्राह्मणोंकी जो चट धरी है तिनकोभी इसी प्रकार करे पहिले निमंत्रण फिर पादार्घ दान करे तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है।

यथानामगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुकामुकशर्माणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः आगतं वः सुस्वागतमिदमासनमास्यतामास्मोति ।
नमोऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते

सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥
यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ।
तत्फलं पांडवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने ॥
विप्रपादोदकक्लिन्ना यावत्तिष्ठति मेदिनी ।
तावत्पुष्करपात्रेषु पिबंति पितरो जलम् ॥

तिस पीछे पितृब्राह्मणोंका निमंत्रण करे तब तांबूल, पूगीफल, दक्षिणा, चदन, तिल, अक्षत, पुष्प यह लेकर उनपर धरे तब यह पढ़े ।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः अद्य कर्तव्ये पार्वणश्राद्धे तत्र-भवंतो मया निमंत्रिता आमंत्रिताः स्थ ।

इसी रीतिसे मातामहब्राह्मणोंका निमंत्रण करे और तांबूल, पूगीफल, चंदन, तिल, अक्षत, पुष्प, दक्षिणा उसी रीतिसे धरे तब यह पढ़े ।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्ध-

प्रमातामहाः अमुकामुकशर्म्माणः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीका अद्य कर्तव्ये पार्वणश्राद्धे तत्रभवंतो मया निमंत्रिता आमंत्रिताः स्मः ।

फिर यह मंत्र पढे ।

अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकर्म्मणि ॥
देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

अब यहां चंदन, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर पूजन करे तब इस मंत्रको पढे जो नीचे लिखा है ।

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अंतरिक्षा उतपार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः श॰स्योनाः सुहवा भवंतु ।

इस मंत्रकरिके पादार्घ दान करे जो नीचे लिखा है ।

ॐ अद्यामुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपि-

तामहा अमुकामुकशर्म्माणः वसुरुद्रादित्य-स्वरूपाः सपत्नीकाः एष पादार्घस्त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा एवं मातामहादीनामपि ।

अब यह इसी प्रकारसे मातामहब्राह्मणोंपर चढावे तहां यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है ।

ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्म्माणो वसुरु-द्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः एष पादार्घ-स्त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा ।

अथ सव्यं कर्मपात्रस्थाने आसनम् ।

यहां सव्य होकर और आचमन करिके कर्मपात्रके लिये अपने बांई ओर वेदी बनावे और उसके ऊपर जलसों फिर लीपे तहां यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है ।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवंतिका ।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायकाः ॥

वेदीको लीपकर उस वेदीपर एक कुशासे एक रेखा

खैंचे फिर उसपर कुशा धरे तिस कुशापर एक तांबेका कोपर धरे तिस कोपरमें तीन कुशा धरे तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है ।

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वं प्रसव उत्पुना-
म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

इस मंत्रसे कुशा धरिके पात्रमें फिर जलसे उस पात्रको भरे तब नीचे लिखे मंत्रको पढे ।

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये
शंय्योरभिस्रवंतु नः ।

अब इस मंत्रसे कर्मपात्रमें जल भरिके फिर जौके अक्षत, चंदन, पुष्प, तांबूल, पूगीफल, तुलसीपत्र, दक्षिणा यह सब वस्तु कर्मपात्रमें रक्खे और तिलोंको एक दोनीमें धरकर कर्मपात्रके पास धर दे और फिर दोनों हाथोंसे कर्मपात्रके ऊपर छाया करे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है ।

कर्मपात्रं संपन्नं सुसम्पन्नं कर्मपात्रं परिपूर्णम्
अस्तु परिपूर्णम् ।

फिर उसके पीछे प्राणायामको करे ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तौ गायत्रीका जप करे तब और शूद्र विष्णुका स्मरण करे तब यह मंत्र पढे ।

ॐ सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालिंजरे गिरौ ।
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥
तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ।
प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥

फिर अपसव्य होकर यह मंत्र पढे ।

पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः ।
यत्र यत्र स्मरेद्विद्वान् पितॄणां दत्तमक्षयम् ॥

इसके पीछे फिर गयाजीका ध्यान करे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है ।

श्राद्धारंभे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ।
स्वान्पितॄन्मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभेत् ॥

अब एक दौनी लेकर तामें छः कुशा रक्खे और थोडेसे तिल धरिके गायत्रीमंत्र पढकर वाम हाथमें धरे और दाहिने हाथसे दौनीको ढके तब गायत्री मंत्र पढे फिर दाहिने हाथमें एक कुशा और थोडे तिल लेकर मंत्र पढे तब पहिले पूर्वदिशाको अपनी बांई ओर एक कुशा और तिल डाल दे फिर इसी प्रकार दक्षिण दिशाकी ओर फेंक दे फिर पश्चिमकी ओर फिर उत्तरदिशाकी ओर फेंक दे फिर ऊपरको आकाशमांझ फेंके पृथ्वीमें डाले तब इस-मंत्रको पढता जाय। जब जहांका नाम आवे तहां फेंकता जाय मंत्र पढता जाय सो नीचे लिखा है।

अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षंतु मे दिशम्।
तथा बर्हिषदः पांतु याम्यां ये पितरः स्थिताः॥
प्रतीचीमाज्यपास्तद्वत् उदीचीमपि सोमपाः।
ऊर्ध्वतस्त्वर्यमा रक्षेत् कव्यवाडनलोप्यधः॥

यह फिर पढे यथा।

रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः।

सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ॥
तिला रक्षंतु असुरान्दर्भा रक्षंतु राक्षसान् ।
पंक्तिं वै श्रोत्रियो रक्षेदतिथिः सर्वतोऽवतु ॥

अब जो तिल बचे तिन्हें और कुशासे पुडिया बांधिके अपनी बांई ओर धोतीकी आंटमें लगावे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

ॐ त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायते शुचिः ।

ऐसे करिके नीवी बांधि लेय अपनी रक्षाके हेतु यह नीविबंधन कर्म कहिये तापीछे फिर सव्य होकर अपने इष्टदेवताका ध्यान करे तब इस मंत्रको तीन वार पढे जो नीचे लिखा है।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

अब यह संकल्प पढे।

ॐ श्रीविष्णुः श्रीविष्णुः श्रीविष्णुः अद्येहेत्यादि

अद्यों नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे युगे कलिप्रथमचरणे जंबूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे वर्तमाने अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे यथानामनक्षत्रयोगकरणमुहूर्तान्विते अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलप्राप्तिकामः पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनांपुरूरवार्द्रवनाम्नां विश्वेषां देवानां अपसव्यं अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकाऽमुकशर्म्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां यथानामगोत्राणां अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकाऽमुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां महालयांतर्गतापरपक्षनिमित्तकं सव्यं पार्वणश्राद्धमहं करिष्ये ॐ कुरुष्व ॥

अब एक कुशा दाहिने हाथमें लेकर कर्मपात्रके जलसे श्राद्धकी सामग्रीको छिड़के तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥
दृष्टिस्पर्शनदोषात्पाकादीनां पवित्रतास्तु ।

अब दो कुशा विश्वेदेवानके पत्तानके ऊपर आसनदानके अर्थ धरे तब यह मंत्र पढे सो नीचे लिखा है ।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रवनाम्नां विश्वेषां देवानां इदं कौशमासनं वो नमः एवं द्वितीयविश्वेषां देवानाम् ।

ऐसे दूसरे विश्वेदेवानके पत्तापर आसन धरे विधिपूर्वक फिर अपसव्य होकर तीन कुशा चट एक पितृब्राह्मणपर फिर तीन दूसरे पितृब्राह्मणपर चढावे फिर तीन तीसरे पितृब्राह्मणपर चढावे तब तीन्होंको धरनेपर यही नीचेका मंत्र पढे ।

अमुकगोत्राणां अस्मात्पितृपितामहप्रपिता-
महानां अमुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपा-
णां सपत्नीकानां इदं कौशासनं त्रेधा विभज्य
युष्मभ्यं स्वधा। एवं मातामहादिकानाम् ।

ऐसेही मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह इस भेद करिके मातामह आदि ब्राह्मणोंको आसन देय फिर तिस पीछे सव्य होकर आचमनकरिके थोडेसे जौ हाथमें लेकर विश्वेदेवानपर चढावे आवाहन करे तब यह मंत्र पढे ।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः
पुरूरवार्द्रवनाम्नो विश्वान् देवान् आवाह-
यिष्ये ॐ आवाहय ।

अब इसी प्रकार करिके यह पढकर विश्वेदेवानपर चढावे ऐसेही दूसरे जो विश्वेदेवा हैं तिनपरभी चढावे यह मंत्र पढे ।

आगच्छंतु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ।
ये यत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवंतु ते ॥
विश्वेदेवा स आगत शृणुताम इम ँ हवम्
एदं बर्हिर्निषीदत विश्वेदेवाः शृणुतेम ँ हवं
मे येऽअंतरिक्षे य उपद्यविष्ट्वा ये अग्निजिह्वा
ऽउतवा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादय-
ध्वम् । अपसव्यम् ।

फिर अपसव्य होकर दक्षिणको मुखकरि बायां घोंटू नवाय कर थोडे तिल लेकर पितृब्राह्मणके सम्मुख होकर यह पढे और तिल उनके ऊपर छोडता जाय इस मंत्रको पढे जो नीचे लिखा है ।

अमुकगोत्रान् अस्मत्पितृपितामहप्रपि-
तामहान् अमुकामुकशर्मणो वसुरुद्रादित्य-
स्वरूपान् सपत्नीकान् यथानामगोत्रान्
अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहान-

मुकामुकशर्मणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् सपत्नीकान् आवाहयिष्ये ॐ आवाहय ॐ उशंतस्त्वा निधीमह्युशंतः समिधीमहि उशन्नुशत आवह पितॄन् हविषे अत्तवे इत्यावाह्य आयंतु नः पितरः सोम्या सोग्निष्वात्ता पथिभिर्देवयानैः अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदंतोधिब्रुवंतु तेवंत्वस्मान् इत्युपतिष्ठेत् आवाहनमुपस्थानमिति द्वयम्।

सव्य होकर विश्वेदेवार्घपात्र पहिले दो वेदी करे पीछे कुशा धरे और वेदीके ऊपर रेखा करिके तापर दो दौनी धरे उनमें दो कुशा धरे तापीछे चंदन फूल जौके अक्षत और जल भरे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये शंय्योरभिस्रवंतु नः।

अब यव डारनेका मंत्र यह है सो पढे।

यवोसि यवयास्मद्वेषो यवया रातीरिति।

गंधमंत्रः—गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति गंधम् ।

पुष्पं—श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुंम इषाण सर्वलोकं म इषाण ।

फिर दोनों हाथोंसे उन दोनों दौनियोंको आच्छादित करे तब यह मंत्र पढे ।

विश्वेदेवाः पात्रं संपन्नं सुसंपन्नं विश्वेदेवाः पात्रं परिपूर्णं परिपूर्णतास्तु इति ।

अब विश्वेदेवानकी दौनीमेंसे अक्षतादिक कुशादि सामग्री विश्वेदेवोंपर चढावे तब यह मंत्र पढे ।

ॐ नमो नारायणाय । ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अंतरिक्षा उत पार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता नऽआपः शिवाः शंस्योना सुहवा भवंतु । ॐ पित्रादित्रयमा-

तामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनो विश्वदेवा एष हस्तार्घो वो नमः ।

अब उस दौनीको कुशा विश्वेदेवानसे जो उनके हाथमें धरा है ताय उठाय करिके दौनीमें धरे फिर एक कुशा और लेय उसे कर्मपात्रके जलसे छिरके इस दौनीको जहांसे उठावे तहां वेदीपै धर देय फिर दूसरी दोनी लेय और उसी प्रकारसे इन्हीं मंत्रोंसे दूसरे विश्वेदेवान-पर चढावे फिर अपसव्य हो दाहिने कंधापर अँगोछा और जनेऊ धरके छः दौनी पितृब्राह्मणोंके आगे करि फिर उन दौनियोंमें तीन तीन कुशा और चंदन, तुल-सीपत्र, तिल, पुष्प, जल, दक्षिणा, दक्षिणकी ओर मुख करिके बांई जांघ नवायकर डाले तब यह जलका मंत्र पढे नीचे लिखा है।

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये शंय्योरभिस्रवंतु नः ॥

कुशमंत्रः–पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः

प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥

तिलमंत्रः—ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवे देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄन्लोकान् प्रीणाहि नः स्वधा ॥

पुष्पमंत्रः—ॐ या फलिनीर्याऽफलाऽपुष्पा-याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचंत्व ँ् हसः ॥ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां ता-मिहोपह्वये श्रियम् ॥

अब अपने दोनों हाथोंकी छाया करे एक दौनीपर तब यह मंत्र पढे ।

पितृपात्रं संपन्नं सुसंपन्नं पितृपात्रं परिपूर्णं परिपूर्णतास्तु ।

अब पहिले दौनीको बांये हाथसे उठा करके पीछे बांयेहीसे कुश लेय करके पितृब्राह्मणके दाहिने हाथमें

देय फिर सब सामग्री दोनोंकी चढावे फिर जल चढावे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

अमुकगोत्रास्मत्पितः अमुकशर्मन् वसुरूप सपत्नीक एष हस्तार्घस्ते स्वधा नमः॥

यह पढकर पहिले पिताके चटपर चढावे फिर पितामहकी जो चट है तापर चढावे तब यह पढे।

अमुकगोत्रास्मत्पितामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप सपत्नीक एष हस्तार्घस्ते स्वधा नमः॥

अब प्रपितामहपर चढावे तब यह पढे।

अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप सपत्नीक एष हस्तार्घस्ते स्वधा नमः॥

ऐसेही क्रमक्रमसे जब तीनों जगह हस्तार्घ करे।

सव्यं—पवित्रसहितमवशिष्टजलयुतं देवार्घपात्रद्वयं यथाक्रमं प्रत्येकं देवासनदक्षिणपार्श्वे विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युत्तानमेव धारयेत्।

अब सव्य होकर कुशजलसहित देवार्घपात्र दोनोंके यथाक्रमसे अलग अलग विश्वेदेवानके दाहिनी ओर औंधी धर दे ताके ऊपर कुशा धर देय फिर अपसव्य होकर यह पढे ।

प्रपितामहार्घपात्रस्थितपवित्राणि पितामहार्घपात्रे कृत्वा तानि सर्वाणि पित्रर्घपात्रे कृत्वा पित्रर्घपात्रं पितामहार्घपात्रोपरि तदुभयं प्रपितामहार्घपात्रोपरि धृत्वा पितृवामपार्श्वे ॐ पितृभ्यः स्थानमसीति मिलितान्येव न्युब्जीकुर्य्यात् एवमेव मात्रर्घपात्राणि मेलयित्वा मातामहब्राह्मणवामपार्श्वेॐमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः स्थानमसीति तदर्घपात्राणि न्युब्जीकुर्य्यात् तदुपरि कुशत्रयनिधानम् ।

तहां अब प्रथम अपसव्य होकर परदा देकर ब्राह्मणके आगे जो अर्घपात्रकी दौनी धरी है तिसको उठाय करिके

नीचेके कुशा सहित दादेके ब्राह्मणके आगे जो धरी अर्घ-पात्र दौनी तामें धरे नीचेके कुशसहित फिर इन दोनोंको उठाय करिके पितृरूपी जो ब्राह्मण है तिनकी दौनी जो अर्घ-पात्रकी है तामें धरे कुशसहित फिर पितृरूपी ब्राह्मणके बांई ओर औंधाय दे तापर तीन कुश और धर दे फिर ऐसेही वृद्धप्रमातामहकी दौनी प्रमातामहकी दौनीमें और प्रमाता-महकी दौनी मातामहकी दौनीमें फिर मातामहके बांई ओर पासही औंधाय दे ता ऊपर तीन कुश और धर दे जबतक धरी रहे तबतक दक्षिणादान करे फिर सव्य होकर आचमन करे विश्वेदेवानपर चंदन चढावे तब यह मंत्र पढ पूजन करे।

चंदनं–गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषि-णीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इति चंदनम्। यवाक्षतं–यवोसि यवया-स्मद्द्वेषो यवयारातीः॥ यवाक्षतम्। पुष्पं–मंदार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा। मरवा मोगरा चैव गृहाणाशु नमोऽस्तु ते॥ इति पुष्पम्।

धूपं–वनस्पतिरसोत्पन्नः सुगंधाढ्यो मनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति धूपम् । दीपं–कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् । तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वर ॥ इति दीपम् । नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् । षड्रसैरर्चितं दिव्यं विश्वेदेव नमोऽस्तु ते ॥ इति नैवेद्यम् । फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । फलस्यार्घ्यप्रदानेन सफलाश्च मनोरथाः ॥ इति ऋतुफलम् । पातालतलसंभूतं वदनांभोजभूषणम् । नानागुणसमाकीर्णं तांबूलं देव ते नमः ॥ तांबूलम् । इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ पूगीफलम् ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ दक्षिणाम् ॥ दिव्यांबरं नवं वस्त्रं क्षौमं चातिमनो-

हरम्। दीयमानं मया देव गृहाणपरमे-
श्वर॥ वस्त्रम्।
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं
पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

अपसव्य होकर विश्वेदेवानकी पूजा करे चंदन, जौ, , तुलसीपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, तांबूल, पूगीफल, दक्षिणा, यज्ञोपवीत वस्त्रादिक सब वस्तुकरिके तब यह संकल्प पढे।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरू-
रवार्द्रवनामानो विश्वेदेवाब्राह्मणाः एतच्चं-
दनाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलपूंगीफलवस्त्र-
यज्ञोपवीतदक्षिणादिकं यद्दत्तं तद्विश्वेदेवाः
प्रियंतां वो नमः॥ इति संकल्पसिद्धिरस्तु।

अपसव्य होकर पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणोंका पूजन

दक्षिणको मुख करिके जंघा नवायके पुनः संकल्प करे ।

एतत् चंदनाक्षततिलपुष्पधूपदीपनैवे-
द्यतांबूलपूगीफलदक्षिणावस्त्रयज्ञोपवीतादिकं
यद्दत्तं तत् पितृब्राह्मणाः मातामहब्राह्मणाः
प्रीयंतां वो नमः इति संकल्पसिद्धिरस्तु ।

फिर सव्य होकर आचमन करे फिर विश्वेदेवानके आगे भोजनके लिये दो वेदी जलसे लीपे वेदीनपर दो ढाकके पत्ते धर फिर अपसव्य होकर पितृब्राह्मण और मातामहब्राह्मणोंके आगे जलसे तीन तीन वेदी करे फिर तीनों वेदियोंपर ढाकके तीन तीन पत्ते धरे फिर सव्य होकर आचमन करि फिर चांवलके चूनमें घी बूरा सहत तुलसी तिल दही यह डारे फिर जल और कच्चे दूधसे मांडे फिर उसमेंसे ब्राह्मणोंके आगे पत्ता धरे है तापर परोसे अथवा तस्मैके पिंड बनाय परोसे फिर अपसव्य होकर विश्वेदेवा और पितृब्राह्मणके मध्यमें एक दोनी धरे जल

दौनी अपने वाम हाथमें धरे ता दौनीमें दूध जलसे सना हुआ जो चून तामेंसे चार पैसेभर लेके धरे वह दौनी हाथपर धरके पितृब्राह्मण और मातामहब्राह्मणोंके सन्मुख होयकर यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणा अग्नौकरणमहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।

हाथकी दौनीमेंसे थोडा अन्न लेकर जलसहित जो विश्वेदेवा और पितृब्राह्मणके बीचमें जो दौनी धरी है तामें आहुती देय तब यह मंत्र पढे नीचे लिखा है।

ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा इदमग्नये कव्यवाहनाय।

फिर दूसरी बार ऐसेही आहुती देय ताका यह मंत्र है यथा।

सोमाय पितृमते स्वाहा इदं सोमाय पितृमते इति।

अब फिर सव्य होकर विश्वेदेवा ब्राह्मणके आगे पात्र पत्ता धरे हैं तामें अन्न परिवेषण करे फिर वा पात्रको

दोनों सूधे हाथोंसे स्पर्श करता हुआ यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है ।

पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।

फिर अपने दाहिने हाथके अंगुष्ठसे अन्नको स्पर्श करता हुआ यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है ।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढम-स्य पाꣳसुरे स्वाहा विष्णो हव्यꣳरक्ष । इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदमैक्षवं एतत्सर्वं हविः ततो यवान् विकीर्य यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यव-यारातीरिति ।

अब विश्वेदेवानके आगे यव डाल दे तिस पीछे जल ऋजु कुशा दो लेकर उत्तरकी ओर मुखकरिके इस मंत्रको पढे ।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुरू-रवार्द्रवनामानो विश्वेदेवा ब्राह्मणाः इदमन्नं

घृताद्युपस्करसहितमुपनीतमुपनेष्यमाणं च कुशचटब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्यंतं विश्वेदेवाः प्रीयंतां वो नमः।

अब अपसव्य होकर बायां घोंटू नवायके पितृब्राह्मण मातामह ब्राह्मणके आगे सामग्री परोसी है तिस पात्रको उलटे हाथ करिके स्पर्श करे तब यह मंत्र पढे।

पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

अब दाहिने हाथके अंगूठेसे पितृब्राह्मण और मातामह ब्राह्मणोंके परोसे हुए सामग्रीके पात्र आगे धरे हैं तिन्हें छुवे तब नीचेके मंत्रको पढे।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा विष्णो कव्यꣳरक्ष इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदमैक्षवं एतत्सर्वं कविः तिलान् विकीर्य अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

इस मंत्रकरिके पितृब्राह्मण और मातामह ब्राह्मणके आगे तिल लेकर थोडेसे छोड दे फिर तिल और जल कुश लेकर दक्षिणको मुख करिके श्राद्धकर्ता यह मंत्र पढे ।

पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणाः इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितमुपनीतमुपनेष्यमाणं च कुशचटब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्य्यंतं पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणाः प्रीयंतां वो नमः ।

फिर सव्य होकर हाथमें जल लेकर यह मंत्र पढे ।

विश्वेदेवाब्राह्मणा यथासुखेन भुंजंतां भुंजीत ।

फिर अपसव्य हो जल लेकर पितृब्राह्मण और मातामह ब्राह्मणोंपर छोडे तब यह मंत्र पढे ।

पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणा यथासुखेन भुंजंतां भुंजीत ।

अब अपने दाहिनी ओर जलसे वेदी करे तब इस मंत्रको पढे ।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवंतिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायकाः॥

उस वेदीपर एक रेखा करे तापर एक कुशा धरे तब यह मन्त्र पढे।

असंस्कृतप्रणीतानां त्यागिनां कुलयोषिताम्।
उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥

पीछे अपनी बांई जांघको नवाय करिके बैठे तब वह जौ चांवलका चून है तामेंसे एक पिंड बनावे सो पिंड अपने दाहिने हाथमें लेय ताके ऊपर एक कुश रखके अपने बायें हाथमें एक दौनी लेय जल भरिके तब इस मंत्रको पढे।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिम्॥

तब हाथमें जो पिंड है ताके ऊपर कुशको धरके वाम हाथकी दौनीका जल दोनों हाथोंसे पिंडपर चढावे और दौनी उसके ऊपर उलटी करके ढक दे और पवित्री

दोनें। हाथकी उतारके पिंडके पास धर दे फिर अपने हाथ पांव धोवे और फिर सव्य होकर आचमन करे फिर पवित्री दूसरी पहिरे दोनों हाथोंमें और कुशा लगावे सब जगह तिस पीछे प्रणव गायत्रीका स्मरण करे और जो शूद्र होय तौ अपने इष्टदेवताका या विष्णुभगवान्का स्मरण करे तब इस मंत्रको पढे ।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः संत्वोषधीर्मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधु द्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाꣳअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः मधु मधु मधु ।

इसके पीछे अपने हाथमें जल लेकर यह पढकरिके विश्वेदेवा ब्राह्मणपर छोडे ।

विश्वेदेवा ब्राह्मणा एतत्ते चुलुकदानमस्तु ।

फिर अपसव्य होकरके अपने हाथमें दोनोंमें जल भरकर यह पढे ।

पितृब्राह्मणा मातामहब्राह्मणा एतत्ते चुलुक-
दानमस्तु।

यह पढकर हाथकी जो दौनी जलभरी है ताहि पितृ-
ब्राह्मण मातामह ब्राह्मण हैं तिनपर चढावे फिर सव्य
होकर परिवेषणका जो शेष अन्न दौनीमें धरा है सो दौनी
अन्नसहित हाथमें लेकर विश्वेदेवा ब्राह्मणके सन्मुख होय-
कर यह मंत्र पढे।

ॐ विश्वेदेवा ब्राह्मणास्तृप्ताः स्थ तृप्ताः स्मः
शेषमन्नं किं क्रियतां इष्टैः सह भुज्यतां
भुंजीत।

अब अपसव्य होकर वाही दौनीसे पितृब्राह्मण और
मातामह ब्राह्मणके सन्मुख होकर उनसे यह पूंछे इस
मंत्रको पढे।

पितृब्राह्मणमातामहब्राह्मणाः तृप्ताः स्थ तृप्ताः
स्मः शेषमन्न किं क्रियतां इष्टैः सह भुज्यतां
भुंजीत।

इसके पीछे पिंडदानके लिये वेदी रेतका चौकोर बनावे सो दक्षिणदिशाको नीची और उत्तर दिशाको अपनी ओर ऊंची बनावे उस वेदीपर मध्यमें दो अंगुल बीच देकर कुशसे दो रेखा करे सो उत्तर दिशासे खींचे दक्षिणकी दिशामें रेखाको पूरी करे प्रादेशमात्र लंबी करे एक बिल-स्तकी करे प्रथम जलसे वेदी लीपे तब रेखा करि यह मंत्र पढे ।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवं-
तिका । पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष-
दायिकाः ।

अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषद इति रेखामंत्रः ।

अब जिस कुशासे रेखा खैंची है उस कुशाको ईशान-कोनकी ओर फेंक दे इसके पीछे जलते हुए अंगारको लेकर दोनों रेखाओंके चारों ओर फेरके दक्षिणदिशामें डाल दे तब यह मंत्र पढे अग्नि फेरनेका मंत्र ।

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः संतः

स्वधया चरंति परा पुरो निपुरो ये भरंत्य-
ग्निष्टांल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ।

इस मंत्रको पढकर दक्षिण दिशाकी ओर फेंक दे दौनी या अर्घामें जल लेकर बांई जांघको नवायके यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्पितः अमुकशर्मन् वसुरूप
सपत्नीक पिंडस्थाने अवनेनिक्ष्व ।

यह मंत्र पढके अपने दाहिनी ओर रेखाके आदिसे जल थोडा डाले फिर दूसरी जगह बीचमें डाले तब यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्पितामह अमुकशर्म्मन् रुद्र-
रूप सपत्नीक पिंडस्थाने अवनेनिक्ष्व ।

फिर अपने दाहिनी ओर रेखाके अंतमें जल थोडा डाले तब इस मंत्रको पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामह अमुकशर्म्मन्

आदित्यरूप सपत्नीक पिंडस्थाने अवने-निक्ष्व ।

फिर इसी प्रकार दूसरी रेखापर डाले तब यह पढे ।

अमुकगोत्रास्मन्मातामह अमुकशर्मन् वसु-रूप सपत्नीक पिंडस्थाने अवनेनिक्ष्व ।

इस मंत्रको पढकर अपने बांई तरफ जो रेखा है तिसके आदिमें जलको छोडे फिर इसी रीतिसे मध्यरेखामें डाले तब यह पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्प्रमातामह रुद्ररूप सप-त्नीक पिंडस्थाने अवनेनिक्ष्व ।

फिर इसी भांति रेखाके अंतमें जल छोडे तब यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मद्वृद्धप्रमातामह आदित्यरूप सपत्नीक पिंडस्थाने अवनेनिक्ष्व ।

फिर मूल और अग्रभागसहित प्रादेशमात्र कुशाओंको दोनों रेखाओंके ऊपर धरे तिस पीछे घृत, सहत, तिल,

दधि, दूध, शर्करा ये सब वस्तु खीरमें डाले अथवा चांव-
लके चूनमें डाले छः पिंड करे आंवलेके अनुमान वा
जैसे बने वैसे बनावे निर्णयसिंधौ तहां प्रमाण लिखते हैं।
"महालये गयाश्राद्धे कुर्यादामलकोपमम् ।" इति।
श्राद्धमयूखे—"आर्द्रामलकमात्रं तु पिंडान् कुर्वीत
पार्वणे ।" इति ।

अब उन पिंडोमेंसे एक पिंड अपने दाहिने हाथमें ले
तिसके ऊपर एक कुशचट रक्खे और बायें हाथमें एक
दौनी वा अर्घा लेकर जल भरके बाईं जांघको नवायके
यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्पितः अमुकशर्मन् वसुरूप
सपत्नीक एष ते पिंडः स्वधा ।

यह पढके अपने दाहिनी ओर रेखांके आदिमें धर दे
तिस पिंडके ऊपर दोनों हाथोंसे दौनी वा अर्घामें जल
लेकर पिंडके ऊपर डाले तब यह मन्त्र पढे ।

इयं भूमिर्गया इदमुदकं फल्गुतीर्थस्य पुष्क-
राचमनम् गयायां गयाशिरसि ।

ऐसेही पितामहादिकोंके पांच पिंड देय तिस पीछे थोडा अन्न आस्तृत कुशके आगे धरे तब यह मंत्र पढे ।

मूलपुरुषेभ्यो नमः मूलमातामहेभ्यो नमः ।

तिस पीछे बचा जो अन्न ताको दाहिने हाथमें लेकर वाम हाथमें कुशा लेकर हाथको कुशासे स्वच्छ करे तब यह मन्त्र पढे ।

उपलेपभागभुजस्तृप्यंतु इति करप्रोक्षणम्
आस्तृतदर्भमूले कुर्य्यात् ।

फिर सव्य होकर आचमन करे भगवान्का स्मरण करे और गायत्रीका ध्यान करे फिर अपसव्य होकर हाथमें अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्रको पढे ।

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।

तिस पीछे बांई ओरसे उत्तरको मुख करके अपनी श्वासको रोके पितरोंका ध्यान करे तब यह मन्त्र पढे ।

अमीमदंत पितरो यथाभागमावृषायिषत ।

यह पढकर अक्षत पिंडोंपर चढावे ता पीछे अपने दाहिने हाथमें अर्घामें जल लेकर अथवा दौनीमें जल लेकर उसमें थोडेसे तिल डालकर यह मन्त्र पढे।

अमुकगोत्रास्मत्पितः अमुकशर्मन् वसुरूप सपत्नीक पिंडे प्रत्यवनेनिक्ष्व ।

यह पढके पितृका जो पिंड है ताके ऊपर तिल जल दौनी या अर्घेमें है ताहीको चढावे ।

एवं पितामहादिपिंडेषु पंचस्वपि ज्ञेयम् ।

ऐसेही पितामहका जो पिंड है तापर रुद्ररूप सपत्नीक कहिके चढावे तब यह मन्त्र पढे।

अमुकगोत्रास्मत्पितामह अमुकशमन् रुद्र-रूप सपत्नीक पिण्डे प्रत्यवनेनिक्ष्व ।

फिर इसी प्रकार प्रपितामहका जो पिंड है आदित्यरूप सपत्नीक कहिकर चढावे तब यह मन्त्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामह अमुकशमन्

आदित्यरूप सपत्नीक पिण्डे प्रत्यवनेनिक्ष्व ।

फिर इसी भांतिसे मातामहके पिंडपर वसुरूप सपत्नीक यह कहिकर चढावे तब यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मन्मातामह अमुकशर्मन् वसु-रूप सपत्नीक पिण्डे प्रत्यवनेनिक्ष्व ।

इसी प्रकार प्रमातामहके पिंडपर रुद्ररूप सपत्नीक कहिके जल तिल दोनोंसे चढावे तब यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मत्प्रमातामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप सपत्नीक पिण्डे प्रत्यवनेनिक्ष्व ।

फिर इसी रीतिसे वृद्धप्रमातामहके पिंडपर आदित्य-रूप सपत्नीक कहिकर चढावे तब यह मन्त्र पढे ।

अमुकगोत्रास्मद्वृद्धप्रमातामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप सपत्नीक पिण्डे प्रत्यवने-निक्ष्व ।

ताके पीछे जो कमरमें नीवी लगी है तिसको कमरमेंसे खोलके पितृकी जो वेदी ह ताके पास धर दे तिस पीछे

अपनी अंजुली हाथोंकी जोरिके यह कहे और प्रार्थना करे तब यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है।

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्मै इति षड्भ्यो नमस्कृत्य पिंडोपरि अक्षतान् क्षिपेत्।

इस मंत्रको पढकर पिंडोंपर तिल अक्षत छोडे तब फिर पिंडोंपर सूत्र चढावे तब नीचेके मंत्रको पढे।

एतद्वः पितरो वासः।

अब ताके पीछे अर्घोमें या दोनोंमें सहत, घृत, दुग्ध, जल लेय करके पिंडोंपर चढावे यह ऊर्जकरण कहावे है तब यह मंत्र पढे।

ऊर्जं वहंतीरमृतं घृतं पयः कीलालं परि-
स्रुतं स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ।

इसके पीछे सव्य होकर यह मंत्र तीन वार पढे ।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

इसके पीछे अपसव्य होकर तुलसीदल, चंदन, अक्षत, तिल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, जल, तांबूल, पूगीफल, यज्ञोपवीत, वस्त्र, दक्षिणा इत्यादिकरिके पिंडोंकी पूजा करे पुष्प करे फिर द्विगुणभुग्न कुश तिल जल हाथमें लेकर यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रा अस्मात्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः एतत् पिंडसंबंध्यनुलेपनादिकं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा नमः इत्युत्सृजेत् ।

इस मंत्रको पढकर जल चढावे फिर पीछे मातामहादिपर इसी रीतिसे चढावे तब यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्ध-
प्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणो वसुरुद्रा-
दित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः एष पिंडसंबंध्य-
नुलेपनादिकं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा
नमः इत्युत्सृजेत् ।

इस मंत्रकरिके दौनी जलकी भरके मातामहादिके पिंडोंपर चढावे तिसके पीछे पिंडोंके आगे पितृब्राह्मणोंसे पूर्व जो भूमि है ताहि कुशजलसे छिडके तब यह मंत्र पढे ।

सुप्रोक्षितमस्तु अस्त्विति प्रतिवचनं शिवा
आपः संतु ।

अब यह मंत्र पढकर पितृब्राह्मणादिकोंके पिंडोंपर जल चढावे सौमनस्यमस्तु यह पढकर पुष्प चढावे " अक्षतं चारिष्टं चास्तु ' यह पढके अक्षतं चढावे फिर कुशासे श्राद्धकर्ता अपने मस्तकको छिडके तब यह मंत्र पढे ।

अस्मत्कुले दीर्घमायुरस्तु शांतिरस्तु पुष्टि-
रस्तु वृद्धिरस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु ।

तिसके पीछे कुशका जल भूमिपर डाले तब यह पढे।

यत्पापं रोगं तन्नश्यतु नश्यतु ।

तिस पीछे यह पढे ।

द्विपदचतुष्पदेभ्यः सुशांतिः श्रीर्भवतु ।

इसके पीछे अक्षय्योदक दान करे जलकुशको हाथमें लेकर यह मंत्र पढे ।

पित्र्यादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनां विश्वेषां देवानां यद्दत्तं तदक्षय्यमस्तु अस्त्वक्षय्यमिति ब्राह्मणः ।

अब अपसव्य होकर द्विगुण भुग्न कुश तिल जल लेकर यह मंत्र पढे ।

अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुः अमुकशर्मणः वसुरूपस्य सपत्नीकस्य यद्दत्तं श्राद्धं तदक्षय्यमस्तु । एवं पंचानामपि अक्षय्योदकदानम् ।

इस प्रकार पितामहादि पांचोंके लिये अक्षय्योदक दान करे । इसके पीछे सव्य होकर श्राद्धकर्ता ब्राह्मणसे आशीर्वाद ग्रहण करे ताका यह मंत्र पढे ।

अघोराः पितरः सन्तु अघोरा मातामहाः सन्तु गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धतां वेदाः सन्ततिरेव च श्रद्धा च नो माव्यगमत् बहुदेयं च नोऽस्त्विति। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु अस्त्विति विप्राः।

फिर अब ब्राह्मणोंके तिलक करे अपनेभी तिलक करावे फिर अपसव्य होकर स्वधावाचन करे अब जो दौनी औंधी धरी है ताके ऊपर जितनी कुश धरे हैं तीन तीन तिन कुशनको पितृपिंडोंके समीप बिछावे तिसके पीछे श्राद्धकर्त्ता अपने हाथमें जल लेकर यह मंत्र पढे जो नीचे लिखा है॥

अमुकगोत्रेभ्यः अस्मात्पितृपितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यः अमुकामुकशर्मभ्यः वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः सपत्नीकेभ्यः तथाच मातामहेभ्यः

मातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः स्वधोच्यतां अस्तु स्वधा प्रतिवचनम् इति ।

यह पढकर हाथका जो जल है सो पितृतीर्थकरिके स्वधावाचनीय संज्ञक कुशोंपर डाल दे फिर पित्रादिकोंके औंधे पात्रको सूधे कर दे ऐसेही मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहकी जो दौनी औंधी अर्घपात्रकी है तिनको सूधी कर दे फिर सव्य होकर दक्षिणादान करे तब यह पढे ।

पित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनां पुरूरवार्द्रवनाम्नां विश्वेषां देवानां कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणायाऽमुकशाखाध्यायिने तुभ्यमहं संप्रददे ।

यह पढकर ऋजुदर्भ जल करिके सुवर्णसहित ब्राह्मणके हाथमें देय तिनके पीछे अपसव्य होकर पितृब्राह्मणोंके दक्षिणा दान करे तब इस मंत्रको पढे ।

अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां यथानामगोत्राणां अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां कृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

पिंडाधारकुशाग्राणि चालयेत् मध्यमापिंडं विसर्जयेदित्याचारः। एकैकं पिंडमुद्धृत्य पात्रे निदध्यात् पिंडाधारकुशान् उल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत्। ततः सपात्रपिंडमुत्थाप्य वामस्कंधे निवेश्य गयाशिरे गयायामिति पठित्वा पिंडान्भूमौ निदध्यात्।

इसके पीछे जो पितामहका पिंड है तिसको उठाकर एक पात्रमें धरे पीछे पित्रादिकोंके पिंडकोभी उसी पात्रमें

धरे फिर पिंडसहित उस पात्रको उठाकर पिंडोंको सूंघे फिर बांये कंधेपर धरे और जो श्राद्धकर्ताने संतानके लिये श्राद्ध किया है तौ उसकी पत्नी पितामहके पिंडको भक्षण करे तब यह मंत्र पढके देय ।

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्
यथेह पुरुषोऽसत् ।

फिर शेष पिंडोंको दक्षिणदिशाको रख देय अपसव्य होकर पिंडोंकी जो वेदी है तापर शंख चक्र लिखे और अक्षत छोडे तब यह पढे ।

वसंताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः ।
वर्षाभ्यश्च शरत्संज्ञकर्तवे च नमो नमः ॥
हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च ।
इति षड्ऋतुपूजनम् ।
अपसव्यं कुशाग्रेण द्विजहस्तान् स्पृशन्
पितृब्राह्मणविसर्जनम् । तत्र मन्त्रः ।
वाजे वाजेवतवाजिनो धनेषु विप्रा अमृता

ऋतज्ञाः अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥

अब अपसव्य होकर कुशाके अग्रभागसे पितृब्राह्मणोंके हाथोंका स्पर्श कर इस मंत्रको पढता हुआ पितृब्राह्मणोंका विसर्जन करे ।

सव्यं–स्वस्ति भवंतो ब्रुवन्तु स्वस्तीत्युक्ते कुशाग्रेण दैविकाद्विजान् स्पृशन् वैश्वदैविकब्राह्मणान् विसर्जयेत् ।

सव्य होकर स्वस्ति आप कहो इस वाक्यको कहकर कुशाग्रभागसे विश्वेदेवाओंको स्पर्श करता हुआ विसर्जन करे ।

ततो द्रोणपुटेन जलमादाय वारिधारया ब्राह्मणान् त्रिर्वेष्टयेत् । तत्र मन्त्रः । ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या देवे द्यावापृथिवी विश्वरूपे आमागंतां पितरा मातरा चामासोमो अमृतत्वेन गम्यात् ।

इसके पीछे दोनीमें जल लेकर जलधारासे ब्राह्मणोंका

तीन वार वेष्टन करता हुआ यह मंत्र पढे जो लिख चुके हैं।

सव्यं–देवताभ्यः त्रिर्जपेत् । अपसव्येन–दीपं निर्वाप्य ।

सव्य होकर ' देवताभ्यः पितृभ्यः इस मंत्रको पढे फिर अपसव्य होकर दीपक शात करे ।

सव्येन भूयसीं दक्षिणा दद्यात् ततः कर्मसाक्षिणे भगवते सूर्य्याय अक्षतादिदानं ततः अंजलिं बद्धा पठेत् ।

सव्य होकर भूयसी दक्षिणाका दान करे तिस पीछे कर्मसाक्षी भगवान् सूर्यका पूजन अर्घदान करे फिर हाथ जोडकर यह स्तुति पढे ।

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

इति श्रीपार्वणश्राद्धपद्धतिः समाप्ता । १७।१२।१५

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४१०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS